रामचरित मानस में नारी महिमा का चित्रण

डॉक्टर आशुतोष मिश्रा, आर बी एस बी सिंह इंटर कॉलेज

कमलापुर – २६१३०२, सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सारांश

तुलसीदास की 'मानस' के अनुसार नारी मानव जीवन की प्रेरणा, संवाहक, आधार और स्रोत है। वह मानव सामाजिक जीवन की रीढ़ हैं। महिलाओं के प्रति तुलसीदास जी के दृष्टिकोण के साथ-साथ हिंदू समाज और कवियों और संतों के साहित्य पर सदैव चर्चा की जाएगी। क्योंकि किसी देश, राष्ट्र, समाज और जाति की सभ्यता और सांस्कृतिक स्थिति उसकी महिलाओं के विचारों और भावनाओं से निर्धारित होती है। तुलसीदास जी का स्त्रीलिंग सार प्राचीन वैदिक ऋषियों की भावनाओं के अनुरूप है। वे समाज में सबसे ऊपर वैदिक दायित्वों के प्रदर्शन को महत्व देते हैं, और वे महिलाओं के प्रति उच्च और उदार वैदिक भावनाओं को रखते हैं। महिलाओं के प्रति तुलसी का रवैया निर्विवाद रूप से उदार था, फिर भी कुछ लोगों ने उनके स्त्री झुकाव पर बहस और आलोचना की है। बहरहाल, राम की मंजिल सदियों से भारत की मंजिल रही है। अगर इसे भारतीय संस्कृति का रूपक भी कहा जाए तो भी इसे बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया जाएगा। रामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की भूमिका भारतीय सभ्यता और संस्कृति के स्पष्ट स्वरूप का प्रतिनिधित्व करने आई है।

आधुनिक प्रकाशन-सुविधाओं से रहित उस काल में भी तुलसीदास का काव्य जन-जन तक पहुँच चुका था। यह उनके कवि रूप में लोकप्रिय होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मानस जैसे वृहद् ग्रन्थ को कण्ठस्थ करके सामान्य पढ़े लिखे लोग भी अपनी शुचिता एवं ज्ञान के लिए प्रसिद्ध होने लगे थे। रामचरितमानस तुलसीदास जी का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ रहा है। उन्होंने अपनी रचनाओं के सम्बन्ध में कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है, इसलिए प्रामाणिक रचनाओं के सम्बन्ध में अन्त:साक्ष्य का अभाव दिखायी देता है।तुलसीदास (Tulsidas Ramayan) ने मनुष्य के जीवन को बेहतर बनाने के बारे में अपने कुछ दोहों के माध्यम से कुछ कहा है, क्या है वह आइये जानते हैं:-

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।

आपद काल परखिए चारी।।1।।

(धीरज, धर्म, मित्र और पत्नी की परीक्षा अति विपत्ति के समय ही की जा सकती है। इंसान के अच्छे समय में तो उसका हर कोई साथ देता है, जो बुरे समय में आपके साथ रहे वही आपका सच्चा साथी है। उसी के ऊपर आपको सबसे अधिक भरोसा करना चाहिए।)

जननी सम जानहिं पर नारी ।

तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ।।2।।

(जो पुरुष अपनी पत्नी के अलावा किसी और स्त्री को अपनी माँ सामान समझता है, उसी के ह्रदय में भगवान का निवास स्थान होता है। जो पुरुष दूसरी औरतों के साथ सम्बन्ध बनाते हैं वह पापी होते हैं, उनसे ईश्वर हमेशा दूर रहता है।)

मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना ।

नारी सिखावन करसि काना ।।3।।

(भगवान राम सुग्रीव के बड़े भाई बाली के सामने स्त्री के सम्मान का आदर करते हुए कहते हैं, दुष्ट बाली तुम तो अज्ञान पुरुष हो ही लेकिन तुमने अपने घमंड में आकर अपनी विद्वान् पत्नी की बात नहीं मानी और तुम हार गए। मतलब अगर कोई आपको अच्छी बात कह रहा है तो अपने अभिमान को त्याग कर उसे सुनना चाहिए, क्या पता उससे आपका फायदा ही हो जाए।)

सचिव बैद गुरु तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ।।4।।

(तुलसीदास जी कहते हैं कि मंत्री, वैद्य और गुरु ये तीन लोग अगर दर से या अपने फायदे के लिए किसी से प्रिय बोलते हैं तो राज्य, शरीर और धर्म इन तीनों का जल्दी ही विनाश हो जाता है। यानि उनका जो कर्म है उसे पूरी इमानदारी से करना चाहिए ना कि अपने फायदे के लिए।)

तुलसी देखि सुबेषु भूलहिं मूढ़ न चतुर न सुन्दर ।

केकिही पेखु बचन सुधा सम असन अहि ।।5।।

(तुलसीदास जी कहते हैं सुन्दर लोगों को देखकर मुर्ख लोग ही नहीं बल्कि चालाक मनुष्य भी धोखा खा जाता है। सुन्दर मोर को ही देख लीजिये उसकी बोली तो बहुत मीठी है लेकिन वह सांप का सेवन करती है। इसका मतलब सुन्दरता के पीछे नहीं भागना चाहिए।)

तमाम सीमाओं और अंतर्विरोधों के बावजूद तुलसी लोकमानस में रमे हुए कवि हैं। वे गृहस्थ-जीवन और आत्म निवेदन दोनों अनुभव क्षेत्रों के बड़े कवि हैं। तुलसी भक्ति के आवरण में समाज के बारे में सोचते हैं। इनकी साधना केवल धार्मिक उपदेश नहीं है वह लोक से जुड़ी हुई साधना है।

प्रस्तावना

तुलसीदास जी प्रतिभाशाली कवी और विद्वान दोनों थे, और उनमें सृजन करने की बेजोड़ प्रतिभा थी; उस समय, सामाजिक संरचना जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी, और उनकी रचनात्मकता ने समुदाय को जीवन दिया। आज की दुनिया में भी राम राज्य की अवधारणा सामाजिक चेतना के लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करती है। तुलसीदास ने रामकाव्य को पारिवारिक जीवन की आदर्श स्थिति पर केन्द्रित किया। रामकथा का प्रमुख लक्ष्य सार्वभौमिक मानवीय सिद्धांतों को विकसित करना और उन पर उचित ध्यान देना था।

रामचरित मानस के सभी पात्र भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देते नजर आते हैं। महिला पात्रों ने, विशेष रूप से, अपनी खुद की जगह विकसित की है। हिंदू धर्म और संस्कृति में वैदिक काल से ही महिलाओं का सम्मान किया जाता रहा है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

रामचरितमानस में तुलसीदास जी कहते हैं जिस घर में नारी का सम्मान होता है उस घर में देवता निवास करते हैं और जिस परिवार में नारी का सम्मान नहीं होता वहां सभी कार्य व्यर्थ होते हैं।

फलस्वरूप नारी का भारतीय सिद्धांतों में दृढ़ विश्वास है, बलिदान की सुरक्षा है, आदर्श, नैतिक, विवेकपूर्ण, वफादार और कर्तव्यपरायण है, और लंबे समय से धर्म की रक्षक है। रामायण के सीता, कौशल्या, कैकेयी, मंदोदरी, पांडवी, मंथरा, सुमित्रा, शूर्पणखा, शबरी और अन्य महिला पात्रों का शानदार तरीके से प्रतिनिधित्व किया गया है। रामकाव्य भारत की एक सच्ची मंजिल पर आधारित है। यह किताब एक शाही परिवार की कहानी बताती है। इस मंजिल में जीवन का प्रतिनिधित्व किया गया है, जिसमें जीवन के सुख-दुख को एक साथ समेटा गया है। राम की मंजिल में कैकेयी की तरह कोमल और शुद्ध हृदय में ईर्ष्या बोई जाती है, और कोमल रक्त वाली प्यारी महिला अपनी कोमलता और नम्रता खो देती है और चट्टान की तरह कठोर हो जाती है। विद्वान का कथानक महिला चरित्र की विविधता के इर्द-गिर्द घूमता है।

’ ’ प्राणनाथ तुम्ह बिनु जग माहीं,

मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं।

जिय बिन देह नदी बिनु बारी।

तैसिअ नाथ पुरूष बिनु नारी।।’ ’

रामचरितमानस द्वारा स्त्रीत्व और मातृत्व स्त्री के गुप्त जीवन की धुरी है। यह मातृत्व पर आधारित है। वात्सल्य मातृत्व का प्रतीक है। प्रवास के समय अपने पुत्र के लिए कौशल्या की हृदय विदारक भावनाएँ-

“माईरी, मोहि कोउ न समुझावै।

राम-गबन साँचो, किधौं सपनो, मन परीतीति न आवै।

कौशल्या के विरह वचन सुति रोई उठीं सब राती,

तुलसीदास रधुवीर-विरह की पीर न जाति बखानी।।”

राम, लक्ष्मण और सीता के प्रेम में माता की उदासीनता चरम पर पहुंच गई। मां का प्यार दुनिया में सबसे अलग होता है। सुमित्रा ने मातृत्व का नेक आदर्श प्रदान कर भारतीय सभ्यता और नारी के गौरव की रक्षा की है।

रामचरितमानस में नारी के साहस, पौरुष, मातृत्व और नारीत्व के अन्य पहलुओं को दिखाया गया है, लेकिन 'मानस' में नारी के दूसरे रूप का वर्णन चार भागों में किया गया है।

नारी द्वारा नारी की निन्दा

पुरूषों द्वारा नारी की निन्दा

राम द्वारा नारी की निदा

विभिन्न पात्रों द्वारा नारी की निन्दा

जब हम रामचरितमानस में अन्य या विभिन्न पात्रों की चर्चा करते हैं तो मंथरा, शबरी और शूर्पणखा का ध्यान आता है। मंथरा स्वाभाविक और समर्पित हैं, भले ही वह निम्न या निम्न दासी थी। कैकेयी अनजाने में उससे बोलती है -

’ ’ काने खोरे कूबरे,

कुटिल कुचाली जाति।

तिय विसेषि पुति चेरि

कहि भरत मातु मुस्कानी।।’ ’

तुलसी ने लिखा है-

’ ’ जद्यपि नीति निपुन नर नाहू। नारिचरित जल निधि अवगाहू’ ’ ।

कैकेयी के मान और हठ ने उसे कर्कश बना दिया।

दूसरी तरफ, तुलसीदास जी अवद्रूप दशरथ की 'मानस' में मृत्यु के परिणामस्वरूप, उस समय प्रेम से विवश महिलाओं की क्या स्थिति है?

“करि विलाप सब रोवहि रानी।

महा विपति किमि जाई।

सुनि विलाप दुःखहु दुःखु लागा।

धीरजहु कर धीरजु भागा बखानी।।"

रामचरित मानस में स्त्री स्वभाव, स्त्री कर्तव्य और स्त्री धर्म की व्याख्या अद्भुत है; यहां नारी की हैसियत और मर्यादा का मूल्य सिर्फ भक्ति और भक्ति है। सीता स्वयं राम के वन प्रस्थान के समय अपने पति के सामने घोर दुःख का चित्र इन शब्दों में रखती हैं-

"प्राणनाथ करूणायतन सुन्दर सुखद सुजान।

तुम्ह बिंनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान।।' '

राम ने सीता के हृदय को दर्पण और मशाल दोनों के रूप में प्रयोग किया। सीता भारतीय नारी भावना की आदर्श छवि हैं। उनके पराक्रम, त्याग और बलिदान की शुभता पूरे रामायण में स्पष्ट रूप से दिखाई गई है।

जगदम्बा जानकी आदर्श पत्नी का प्रतीक है, जब श्री राम से प्रेरित होकर, वह जंगल में न घूमने के अपने अंतिम संकल्प की घोषणा करती है:

"रागु, रोषु इरिषा मदु मोहु।

जानि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू।

सकल प्रकार विकाट बिहाई।

मन क्रम वचन करेहु सेवकाई।।"

राम के सामने शबरी ने अपनी विनम्रता का परिचय दिया। राम ने शबरी के बयान के जवाब में कुछ नहीं कहा। नतीजतन, महिलाओं के लिए उनकी भावनाएं स्पष्ट हो जाती हैं। 'रामचरितमानस' अन्य पुरुषों द्वारा महिलाओं की निंदा को दर्शाता है। महिलाओं के खिलाफ ईशनिंदा की समुद्र की टिप्पणी –

"ढोल गँवार सूद्र पशु नारी।

ये सब ताड़न के अधिकारी।।"

रामचरितमानस द्वारा राम का नाम मर्यादा पुरुषोत्तम है। राम ने पानी से महिलाओं की निन्दा सुनी लेकिन कुछ नहीं कहा, उसे अनदेखा करके समुद्र की बातचीत की व्यर्थता का प्रदर्शन किया।

"सुनत विनीत अति कह कृपाल मुसुकाइ।

जिही विधि उतेरे कपि कतकुतात सो कहहु उपाइ।।"

तुलसीदास पर लगाया गया ईशनिंदा का आरोप भ्रामक और बेकार है। यदि हम रामचरित मानस में स्त्री पात्रों को देखें, तो हम देख सकते हैं कि मंदोदरी शत्रु की पत्नी सीता के प्रति कितनी समर्पित थी। इस प्रेरणा से महिलाएं महिलाओं का सम्मान करना सीखेंगी और तभी वे पुरुषों का मार्गदर्शन कर पाएंगी।

शबरी ने भी राम समक्ष स्वयं अपनी निन्दा की है-

"के हि विधि अस्तुति करों तुम्हारी।

अधम जाति मै जडमति भारी।

अधम ते अधम अधम अतिनारी।

तिन्ह महँ मैं मतिमन्द गँवारी।।"

मंदोदरी एक राजनीतिक विद्वान और एक कार्य सहायक भी थी। उसने रावण को मनाने का प्रयास किया, लेकिन रावण के हठ के कारण वह असफल रही।

रामचरितमानस में भरत की पत्नी मांडवी को साध्वी और पतिव्रता के रूप में दिखाया गया है। वह अपने पति की चिंतित अवस्था को देखती है तो कहती है-

"नम्र स्वर में वह बोली 'नाथ' ।

बताऊँ कैसे दुःख में हाथ।

बता दो यदि हो कहीं उपाय,

टपाटप गिरे अश्रु असहाय।।"

कैकेयी का मजाक, जो मंथरा के दिल को निशाना बनाता है, एक क्रूर मजाक है।

पंचवटी का स्त्री चरित्र शूर्पणखा में भी मौजूद है, फिर भी उसकी कार्य-भावना भी दिखाई देती है।

"अपना ही कुल शील प्रेम में,

पड़कर नहीं देखती हम।

प्रेमपात्र का क्या देखेंगी,

प्रिय है जिसे लेखती हम।।"

रामचरितमानस में नारी की वीरता को भी बहुत मजबूती से दिखाया गया है। मंदोदरी एक ऐसी रानी हैं जिन्होंने समय की रणनीति के आधार पर रावण को मनाने का प्रयास किया।

अध्ययन के उद्देश्य

नियोजित अनुसंधान के सटीक उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

रामचरितमानस के माध्यम से पाठकों को उस संस्कृति से अवगत कराना जो भारतीय समाज के केंद्र में है।

वर्तमान युग के परिदृश्य पर कड़ी नजर रखते हुए पाठकों को मानवीय भावनाओं और महिलाओं के पूज्यनीय रूप से अवगत कराना।

निष्कर्ष

रामचरितमनस में एक आदर्श भारतीय समाज का चित्रण है। अब चुनौती यह है कि यह एक बदलते "आधुनिक" दृष्टिकोण वाले समाज के संदर्भ में कहां खड़ा है।

प्रेरणा और आदर्श होने में क्या अंतर है? क्योंकि रामचरितमानस आज भी हमारे समाज में पूर्णतया व्यापक है। मानवीय मूल्यों की जागृति और नारी चेतना पर रामचरितमानस का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। रामचरितमानस नारी चेतना को जगाने में एक प्रमुख हस्ती थीं। सभी पात्रों में वर्तमान नारीवाद को नयी आकृति प्रदान करने की क्षमता है। परिणामस्वरूप "भारत में महिलाएं जातीय संस्कृति की रखवाली हैं। सर्वोत्तम स्त्रियोचित गुणों की मूर्तमान आदर्श है।' '

ग्रन्थसूची

डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर।

डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर।

डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर, पृष्ठ न. 276

मानस अयोध्या काण्ड दोहा स. 152.

गीतावली अयोध्या काण्ड दोहा स. 53.

मानस सुन्दर काण्ड पद स. 57,59 ।

डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर, पृष्ठ न. 202।

डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर, पृष्ठ न.190।